ललितविक्रम

(ऐतिहासिक नाटक)

८५८२
१४१८

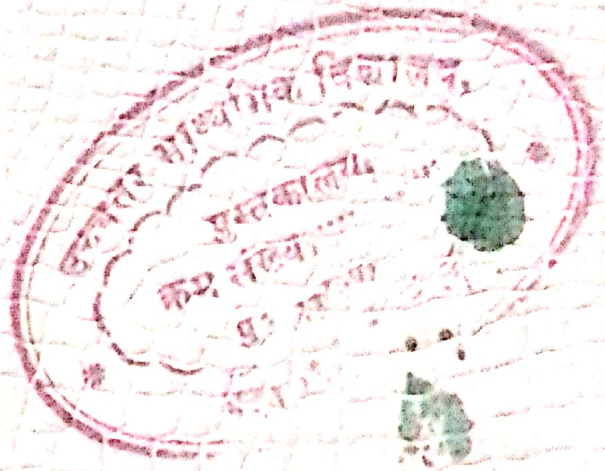

वृन्दावनलाल वर्मा

मयूर प्रकाशन
झांसी

Scanned with OKEN Scanner

प्रकाशक
सत्यदेव वर्मा, बी. ए., एल.एल. बी.
मयूर प्रकाशन झांसी

सातवां संस्करण—१९६३
सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन
मूल्य १।।।)

मुद्रक
रामसेवक खड्ग
स्वाधीन प्रेस, झांसी

नाटक के पात्र

रोमक—अयोध्या का राजा।

ललितविक्रम—रोमक का पुत्र (अयोध्या का राजकुमार)

धौम्य—नैमिषारण्य के विख्यात आश्रमवासी ऋषि।

आरुणि—
वेद—
कुत्सक— } धौम्य के शिष्य

मेघ—उपाध्याय, धनुर्वेद का एक आचार्य।

नील—एक धनाढ्य व्यवसायी पणि (फिनीशियन)

कपिञ्जल—एक शूद्र जो तपस्या करके ऋषिपद पर पहुंच गया।

सोम—रोमक का पुरोहित, अयोध्या नगरी की सभा का सभापति

सुबाहु—एक ग्रामीण।

दीर्घबाहु—एक लाख निवर्तन भूमि का स्वामी, एक महाशाल।

ममता—रोमक की रानी, ललितविक्रम की माता, ईशान, कृपक, वणिक, दण्डिक, अमात्य और जनपद के अन्य व्यक्ति। ममता की परिचारिकायें और अन्य स्त्रियाँ।

समय—उत्तर-वैदिककाल।

Scanned with OKEN Scanner

राजकीय माध्यमिक विद्यालय
पुस्तकालय

Scanned with OKEN Scanner